विचार बिन्दु

मनुष्य जीवन अनुभव का शास्त्र है। –विनोबा

आँकड़ों का खेल, कौन पास कौन फेल?

जिस प्रकार और जिस गति से हमें सरकारों की ओर से विभिन्न विषयों पर आंकड़े परोसे जाते हैं, उसे देखकर तो कई बार लगता है, हमारी सारी प्रगति आंकड़ों में ही सिमट कर रह गई है। आंकड़ों के मोहपाश या भ्रम जाल में हम इतना उलझ कर रह गए हैं कि यही पता नहीं लगता कि आंकड़े हमें क्या बता रहे हैं और क्या छुपा रहे हैं। एक ही प्रकार के आंकड़ों को तोड़ मरोड़ कर, विभिन्न राजनीतिक दल एवं अधिकारी भी, जैसा चाहे वैसा निष्कर्ष निकालकर जनता के समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं।

जिन आंकड़ों के आधार पर सत्ताधारी दल, अत्यधिक तीव्र गति से प्रगति होना सिद्ध करने का प्रयास करता है, उन्हीं आंकड़ों का उपयोग करते हुए यह भी सिद्ध किया जा सकता है कि हमारी प्रगति की गति अत्यंत धीमी है। आंकड़ों के इस जाल को समझने के लिए हम कुछ विषयों जैसे महंगाई, जीडीपी, बेरोजगारी, महिला सुरक्षा, उद्योगीकरण के बारे में आंकड़ों का विश्लेषण करने प्रयास करेंगे।

महंगाई को सामान्यतया मुदास्फीति की दर से आंका जाता है। सामान्यतया उपयोग में आने वाली विभिन्न वस्तुओं की कीमत के आधार पर यह तय किया जाता है कि महंगाई कितनी है। समय-समय पर वृद्धि दर में कमी होना इस बात का संकेत नहीं है कि महंगाई में कमी हुई है। सत्ताधारी दल हमेशा यही कहता आया है कि यदि मुद्रा स्फीति की दर 7 प्रतिशत से घटकर 4 प्रतिशत रह जाए तो महंगाई में कमी हुई है। वास्तव में कीमतों में बढ़ोतरी दोनों ही स्थितियों में होती है। पहली स्थिति में बढ़ोतरी अधिक तेजी से होती है और दूसरी में बढ़ोतरी कुछ कम गति से होती है। मुद्रास्फीति की दर ज्ञात करते समय यह भी देखने की आवश्यकता है किन किन वस्तुओं की कीमतों के आधार पर उपभोक्ता मूल्य सूचकांक निकाला जाता है। क्या इनमें वही वस्तुएं सम्मिलित हैं जो साधारण नागरिक दिन प्रतिदिन अपने काम में लेता है?

किसी किसी भी देश की प्रति व्यक्ति आय देश की कुल जीडीपी को उसकी जनसंख्या से भाग देकर निकाली जाती हैं प्रति व्यक्ति आय से यह नहीं ज्ञात होता है कि देश में कितनी समृद्धि है यह संभव है कि कुछ प्रतिशत व्यक्तियों के पास अधिक आए हो और अधिकांश के पास बहुत कम, तब भी प्रति व्यक्ति आय बढ़ सकती है। किसी भी देश की जीडीपी वृद्धि की दर भी इसी प्रकार से बड़ी भ्रामक हो सकती है। जीडीपी में वृद्धि की गणना, गत साल की जीडीपी के आधार पर की जाती है। उदाहरण के लिए यदि किसी देश की जीडीपी 2019 में 100 करोड़ थी और कोरोना के वर्ष में यह 24 प्रतिशत घट गई अर्थात 2020 में यह 76 करोड़ हो गई। इस पर पर यदि 10 प्रतिशत की वृद्धि भी हो जाय तो यह 2021 में 76इ7.6ह83.6 करोड़ होगी। यह जी डी पी वास्तव में 2019 की जी डी पी से भी कम है। इसका अर्थ यह हुआ कि कम आधार पर वृद्धि सदैव अधिक दिखाई देगी। अतः भारत सरकार का यह दावा करना कि जीडीपी में गत वर्ष की तुलना में बहुत वृद्धि हुई है, एक प्रकार से भ्रमित करने वाली बात होगी। आंकड़ों से भ्रमित करने का यह खेल कई क्षेत्रों में चल रहा है इसे समझना पाठकों के लिए आवश्यक है ताकि आंकड़ों के पीछे छुपा हुआ सच जान सके

उज्जवला योजना के अंतर्गत 8 करोड़ गृहणियों को निशुल्क रसोई गैस देने का दावा किया जाता है। सरकार के प्रवक्ताओं द्वारा यह कहा जाता है कि गैस के सिलेंडर मुफ्त दिए गए जिससे उन्हें लकड़ी जलाने से होने वाले धुएँ से मुक्ति मिली है। वास्तविकता यह है ऐसा कि घरेलू सिलेंडर की कीमत जो 2014 में लगभग 400 थी, अब बढ़कर 1150 रुपए हो गई। अब भारत सरकार ने सब्सिडी पूरी तरह समाप्त कर दी है और चाहे गरीब हो अथवा अमीर, सभी को सिलेंडर 1150 रुपये में ही मिल रहा है। इस प्रकार सिलेंडर देने की योजना में गरीबों के ऊपर अधिक भार ही डाला है। उज्जवला योजना के अंतर्गत जिन्हें मुफ्त कनेक्शन दिया गया, वे तो अब सिलेंडर दुबारा भरवाने की स्थिति में ही नहीं है।

प्रधानमंत्री द्वारा बार-बार यह कहा गया कि भारत को 2022 तक 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बना दिया जाएगा। वर्तमान में यह अर्थव्यवस्था लगभग 2.8 ट्रिलियन डॉलर की है। सामान्य विवेक वाला व्यक्ति भी जानता है कि प्रति वर्ष कीमतों में वृद्धि के कारण जीडीपी कुछ 5 प्रतिशत तो बढ़ेगी ही। इसका श्रेय सरकार कैसे ले सकती है? हां, यदि नए उत्पादन में वृद्धि होती है तो उसे अवश्य श्रेय दिया जाना चाहिए। सरकार वास्तव में यदि गरीबों के हित में इतना ही काम कर रही है तो समय के साथ गरीबों और अमीरों की आय में अंतर कम होना चाहिए था, किंतु हो इसके ठीक विपरीत रहा है। देश की संपत्ति का केंद्रीकरण कम से कम परिवारों में होता जा रहा है और अधिकांश परिवार जैसे-तैसे अपना गुजारा चलाने के लायक हैं। क्या इस प्रकार की स्थिति में क्या हम सरकार के इन आंकड़ों से कोई राहत प्राप्त कर सकते हैं कि गरीब के अब अच्छे दिन आ गए हैं?

आम नागरिक जितना शीघ्र इस सत्य को पहचाने और आंकड़ों का विश्लेषण करने की क्षमता को विकसित करे, उतना ही उसके लिए अच्छा है। यदि आम नागरिक स्वयं ऐसा न कर पाए, तो जागरूक नागरिक संगठनों के लिए ऐसा करना उनका सामाजिक दायित्व है। ऐसा करते समय, किसी भी प्रकार की राजनीति से ऊपर उठकर निर्णय करना होगा।

वास्तविकता तो यह है कि विभिन्न अंतरराष्ट्रीय सर्वेक्षण से यह सिद्ध हुआ है कि और असमानता के सूचकांक में भारत की स्थिति पहले से भी खराब हुई है और हम विश्व के सर्वाधिक असमानता वाले देशों में आते हैं। हम विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था हो जायें और सबसे तेज बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था भी बन जाएँ तो उससे समान्य जन को कोई लाभ नहीं है। इस प्रकार के आंकड़ों पर, जो सरकार द्वारा प्रसारित किए जाते हैं, प्रश्न करना चाहिए और समझना चाहिए कि जो प्रगति हो रही है, वह किसके हित में है?

आत्मनिर्भर भारत की बात सरकार द्वारा बहुत कही गई है और इसे बहुत बड़ी उपलब्धि के रूप में देश के सम्मुख प्रस्तुत किया गया है। आत्मनिर्भरता का अर्थ तो यह होता है कि हम अपना उत्पादन अधिकाधिक बढ़ाएं और विदेशों से आयात कम हो। देखा जाए तो चीन के साथ हमारे निर्यात और आयात में अंतर बढ़ा है। आयात, निर्यात की तुलना में बहुत बढ़ा है। क्या अधिक आयात करना आत्मनिर्भरता की निशानी है, विशेषकर ऐसे देश से साथ जिसके साथ हमारा सीमा विवाद चलता रहा है? एक बार तो सत्ताधारी दल एवं उसके सहयोगी संगठनों द्वारा चीन में निर्मित वस्तुओं के बहिष्कार की बात तक की गई थी और अब उसी देश से हम आयात और अधिक बढ़ा रहे हैं। वर्ष 2021 एवं भारत का चीन से आयात निर्यात की तुलना में 4400 करोड़ डॉलर अधिक था। यह अन्तर वर्ष 2022 में बढ़कर 7300 करोड़ डॉलर हो गया। यह कैसी आत्मनिर्भरता है?

सरकार विभिन्न आंकड़े प्रस्तुत करते हुए दावा करती है कि रोजगार के कितने अवसर युवाओं के लिए उपलब्ध कराएं हैं? सरकार के विभागों में रिक्त पदों को नहीं भरा जा रहा है और नौकरियों की स्थिति पहले से भी खराब होती जा रही है। अब सरकार ने नौकरी देने के स्थान पर यह कहना प्रारंभ किया है कि रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए जा रहे हैं। सरकार, आंकड़ों के आधार पर यह कभी नहीं कहती कि कितनी आय प्रतिमाह अर्जित करने वाले व्यक्ति को पर्याप्त रोजगार उपलब्ध कराया जाना माना जाएगा? सरकार को यह भी बताना चाहिए कि आज भी लगभग 40 करोड़ लोग एक डॉलर प्रतिदिन पर गुजारा कर रहे हैं।

सरकार पी एफ खातेदारों की संख्या में वृद्धि को इस प्रकार प्रचारित कर रही है जैसे करोड़ों लोगों को रोज़गार दे दिया हो। वास्तविकता यह है कि श्रम कानून के अंतर्गत नियोक्ता पर पी एफ कानून तब ही लागू होता है जब 20 से अधिक श्रमिक/कर्मचारी काम करते हों। किसी स्थान पर पहले लोग काम करते थे और अब एक भी बढ़ेगा तो 20 लोगों का पी एफ खाता खोलना होगा। इसका अर्थ यह हुआ कि एक नए रोजगार को सरकार 20 मान रही है। कई सरकारी-गैर सरकारी संस्थाओं के अनुसार गत कई वर्षों में बेरोजगारी का स्तर सर्वाधिक है। राष्ट्रीय सैंपल सर्वे संगठन के द्वारा कुछ समय पूर्व बेरोज़गारी की जो स्थिति, वास्तविकता के रूप में सार्वजनिक रूप से देश के सम्मुख लाई गई, तो सरकार को यह स्वीकार नहीं हुआ और उसने तत्कालीन महानिदेशक राष्ट्रीय सैंपल सर्वे संगठन को ही अपने पद से त्यागपत्र देने हेतु बाध्य कर दिया। आंकड़े दुधारी तलवार की तरह है। हम चाहें तो उनका उपयोग स्थितियों को सुधारने के लिए कर सकते है, या फिर हम उनका उपयोग लोगों को भ्रमित करने के लिए कर सकते हैं। यदि हम उसका उपयोग दुष्प्रचार के रूप में करना चाहते हैं तो उससे जनता का हित होने वाला नहीं है।

आज जब आम व्यक्ति छोटी-छोटी नित्य प्रति काम आने वाली वस्तुएं जैसे दूध, दलिया, दाल आदि पर जीएसटी बढ़ाने के कारण शिकायत करता है तो उसे यह कहा जाता है कि इन्हे खुले में बेचने पर जीएसटी नहीं है, अपितु पैकिंग में बेचने पर जीएसटी लगाया गया है। नागरिकों को यह समझना होगा कि 25 किलो की पैकिंग पर जीएसटी नहीं है है किंतु आधा किलो, एक किलो आदि की पैकिंग पर जीएसटी है। साधारण व्यक्ति, सामान्यतया पैसे की कमी के कारण केवल आधा किलो, एक किलो की पैकिंग में दूध, दाल, आटा, दलिया आदि खरीदता है। उसके लिए तो ये सब जी एस टी के कारण महंगी हो गई हैं। इसका परिणाम स्वरुप जीएसटी से सरकार की आय में वृद्धि अवश्य होती है, किंतु यह गरीबों की तो कमर तोड़ने का ही काम करती है। साथ ही 25 किलो या उससे अधिक की पैकिंग में ये सामान बेचने वाली बड़ी कंपनियों को लाभ भी हो जाता है।

सरकार प्रति माह आंकड़े प्रसारित करती है कि जीएसटी के संग्रहण में रिकॉर्ड वृद्धि हो रही है। यह कहकर सरकार देशवासियों को समझाने का प्रयास कर रही है कि देश की अर्थव्यवस्था सुधर रही है तथा देशवासी भी संपन्न होते जा रहे हैं। यह देखने का प्रयास नहीं किया जाता कि कीमतें बढ़ने के कारण उसके अनुपात में जीएसटी संग्रह तो स्वाभाविक रूप से अधिक ही होगा।

कुल मिलाकर, यही कहा जा सकता है कि जब भी सरकारें विभिन्न दावे करें तो जनता को उन दावों की सच्चाई तक पहुंचना होगा। देशवासियों को इतना जागृत होना होगा कि वह इन आंकड़ों के पीछे छुपे हुए सच को पहचान सकें और निष्कर्ष निकाल सके वे उनके हित में हैं या नहीं?

सरकार प्रति दिन, विभिन्न संचार माध्यमों से जनता को यह जताती है कि हमने 'यह किया', 'वह किया'। देशवासियों को तो केवल एक ही बात से मतलब है कि सरकार ने जो कुछ भी किया हो, पर उसका 'हुआ क्या?' इस प्रश्न के उत्तर से ही ज्ञात होगा कि आम नागरिक की स्थिति पहले की तुलना में कैसी है? क्या वह बेहतर जिंदगी जी पा रहा है अथवा केवल आंकड़ों को ही देखकर और सुनकर आभासी प्रसन्नता का अनुभव कर रहा है?

आम नागरिक जितना शीघ्र इस सत्य को पहचाने और आंकड़ों का विश्लेषण करने की क्षमता को विकसित करे, उतना ही उसके लिए अच्छा है। यदि आम नागरिक स्वयं ऐसा न कर पाए, तो जागरूक नागरिक संगठनों के लिए ऐसा करना उनका सामाजिक दायित्व है। ऐसा करते समय, किसी भी प्रकार की राजनीति से ऊपर उठकर निर्णय करना होगा। यदि ऐसा नहीं हुआ, तो यह तय कर पाना ही असंभव होगा कि आंकड़ों के इस खेल में कौन पास, कौन फेल?

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

बाप में एक भी पशु चिकित्सक नहीं, सात में से पांच पद खाली

- **गो पुत्र सेना ने चिकित्सालय पर ताला जड़ अनिश्चितकालीन धरना शुरू किया**

आम पशुपालक को सुविधा नहीं मिलने से क्षुब्ध गो पुत्र सेना ने धरन-प्रदर्शन किया।

बाप, (निसं)। जोधपुर जिले के बाप कस्बे में संचालित प्रथम श्रेणी राजकीय पशु चिकित्सालय में एक भी पशु चिकित्सक नहीं है। स्वीकृति 7 पदों में से पांच रिक्त पड़े है। अभी अस्पताल महज एक पशु परिचर के भरोसे ही है। इस कारण लंपी स्किन जैसी भंयकर बीमारी में बीमार गोवंश को उपचार नहीं मिल पाया। हजारो गोवंश काल कलवित हो गया। बीमारी की भयावता अभी भी जारी है। पशुओं के अंग सडने लगे है। कीड़े तक पड़ गए है। सरकारी पशु चिकित्सालयों में किसी प्रकार की आम पशुपालक को सुविधा नही मिलने से क्षुब्ध गो पुत्र सेना ने पूर्व सूचना अनुसार सोमवार को बाप में संचालित प्रथम श्रेणी पशु चिकित्सालय के मुख्य द्वार पर ताला जड़कर अनिश्चितकालीन धरना शुरू कर दिया।

गो पुत्र सेना जिला संयोजक सुशील हिन्दू ने बताया कि उपखंड अधिकारी मांगीलाल को मुख्यमंत्री के नाम का ज्ञापन भी सौंपा गया है। ज्ञापन में लिखा कि बाप व आसपास के इलाके में हजारो पशुपालकों की जीविका चलाने का साधन मात्र दूध उत्पादन ही है। बीमार पशुधन का इलाज कराने का केंद्र बाप ही है, मगर बाप में मात्र एक परिचर के भरोसे अस्पताल है। दवाइयां भी उपलब्ध नही है। ऐसे में गरीब पशुपालक के सामने विकट समस्या है।

सरकार ने 7 पद स्वीकृत किये है, लेकिन वरिष्ठ पशु चिकित्सक सहित 5 पद खाली है। पालीवाल ने बताया कि गौपुत्र सेना का धरना सुबह 10 से सायं 5 बजे पशु चिकित्सालय के समक्ष रहेगा। अगर सरकार ने 7 दिन में बाप पशु चिकित्सालय के रिक्त पद नही भरे तो आंदोलन तेज किया जाएगा। पहले दिन सुशील हिंदू सहित जगमाल भील, प्रेम पालीवाल, देवीलाल पालीवाल, राणुलाल थानवी, मनीष विस्सा, मनोज लोहिया, धू?चन्द कोठारी, मोहन भैया, विजय कुमावत, पंकज जोशी, मांगीलाल सेन, चंडीदान, पवन तंवर, श्याम राठी, मनीष तंवर, राणुलाल कुमावत, रूपाराम कुमावत, कंवर लाल ढोली, पन्नालाल कुमावत, कमल पालीवाल, देवीलाल पालीवाल आदि धरने में बैठे।

लंपी से पीड़ित गायों के लिए सहायता राशि

निवाई, (निसं)। पीपलू पंचायत में लंपी स्किन बीमारी से पीडित चल रही गायों के इलाज तथा गौसेवा को लेकर गांधी गौशाला टोंक के संरक्षक अभयमल बंब ने पीपलू की श्रीश्याम गौशाला में 50 हजार रुपए की राशि भेंट की है। वहीं ग्राम सेवा सहकारी समिति अध्यक्ष रामजीवण मीणा ने भी 21 हजार रुपए की राशि गौसेवार्थ संचालकों को भेंट की हैं। इस दौरान अभयमल बंब ने कहा कि कहा कि इन दिनों पूरे जिले सहित प्रदेश भर में गोवंश संकट काल से गुजर रहा है। ऐसे में गोवंश को बचाने के लिए आगे आने की जरूरत है। जीएसएसएस अध्यक्ष रामजीवण मीणा ने कहा कि अब गोवंश के लिए यह संकट का समय है।

बाड़े में बंधी गायों पर पैंथर ने हमला किया

मृत गोवंश के गले में नाखूनों के लगे निशान।

देवगढ़, (निसं)। नगर के खादी ग्रामोद्योग के पीछे वाले रास्ते के उण्डे सेरिये से गुजर कर जाने वाला रास्ता है जो कि सोपरी बांध पर जाता है। इसके बीच में लक्ष्मीनारायण पिता त्रिलोक चंद जीनगर के खेत पर बाड़े में गायें बंधी हुई थी। जिन पर पैंथर द्वारा मौका पाकर हमला कर दिया गया। जिससे गायों की मौत हो गई। इसी बीच पैंथर शिकार के लिए आया और गायों पर धावा बोल दिया। जिससे कुछ गोवंश तो डर से रस्सी तोड़कर भागने में सफल हो गयी। परंतु कुछ गोवंश जो कि पैंथर की शिकार हो गयी जिसमे गायों को बहुत ही बुरे तरीके से नोंच डाला।

जैसे ही घटना की जानकारी आस पास के लोगो को लगी तो लोगो मे डर एवं भय का माहौल व्याप्त हो गया। पैंथर गोवंश को जख्मी हालत में आधी अधूरी ही छोड़ भागा घटना की जानकारी मिलने पर वन विभाग को सूचना दी गई।सूचना मिलते ही वन विभाग की टीम मौके पर पहुँच मोके का जायजा लेते हुए बताया कि किसी जंगली जानवर द्वारा ही हमला किया गया है।

इसी बीच रेंजर कमलेश रावत ने बताया कि गोवंश को काफी हद तक नोंच डाला है जिससे गायों की मृत्यु हो गई है तथा मृत गायों का पोस्टमार्टम करवाकर विभागीय नियमानुसार कार्यवाही करते हुए मुआवजे के लिए पत्रावली तैयार कर उच्चाधिकारियों को प्रेषित कर दी जाएगी जिससे की जो भी सहायतार्थ राशि आएगी वह प्रार्थी के खाते में जमा हो जाएगी।प्राप्त जानकारी के अनुसार पूर्व में छः माह पहले भी लादू लाल जीनगर की गाय पर हमला कर दिया था।आसपास के खेतों में कार्य करने वाले लोगों में काफी भय का माहौल व्याप्त है तथा कुछ दिनों से पैंथर के इधर-उधर दौड़ने की हरकतों को भी देखा गया है।

आक्रोशित ग्रामीणों ने स्कूल गेट पर ताला जड़ा

बसेड़ी के नादनपुर स्कूल में ग्रामीणों व विद्यार्थियों ने विद्यालय के गेट पर ताला लगाकर प्रदर्शन किया।

- **यहां लंबे समय से अध्यापकों के पद खाली चल रहे**
- **इलाके में नहीं है अंग्रेजी माध्यम स्कूल**

नादनपुर, (निसं)। बसेड़ी इलाके के नादनपुर स्कूल में सोमवार को ग्रामीणों व विद्यार्थियों ने विद्यालय के गेट पर ताला जड़कर जमकर विरोध प्रदर्शन किया।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय नादनपुर में लंबे समय से अध्यापकों के पद खाली चल रहे हैं तथा इलाके में अंग्रेजी माध्यम स्कूल नहीं है। इस पर ग्रामीणों और स्कूली छात्र छात्राओं ने शिक्षकों के खाली पदों को भरने तथा हिंदी और इंग्लिश मीडियम स्कूल संचालित करने की मांग को लेकर विद्यालय गेट पर ताला जड़ दिया और जमकर विरोध प्रदर्शन किया।

ग्रामीणों का कहना है कि स्कूल में अध्यापकों की कमी के बारे में और विद्यालय को अंग्रेजी मीडियम व हिंदी मीडियम दोनों माध्यमों में संचालित कराने को लेकर कई बार संबंधित विभाग के अधिकारियों एवं क्षेत्रीय विधायक से मांग की गई है। विद्यालय में शिक्षकों की कमी के कारण बच्चों की शिक्षा प्रभावित होने के साथ-साथ उनका भविष्य भी संकट में पड़ रहा है। जिसके कारण विद्यार्थियों ने मजबूर होकर स्कूल के गेट पर ताला लगा कर विरोध प्रदर्शन किया।

वहीं बच्चों के साथ ग्रामीण भी विद्यालय के आगे धरने पर बैठ गए। विरोध प्रदर्शन की सूचना मिलने पर मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी रामगोपाल मीणा मौके पर पहुंचे, जिन्होंने विद्यार्थियों और ग्रामीणों से समझाइश कर मामले को शांत कराया। साथ ही एक सप्ताह में उनकी मांग पूरी करने का आश्वासन दिया।

आंदोलन के पांचवे दिन पहुंचे सीबीईओ, चार शिक्षक लगाये

बाप में धरना स्थल पर ग्रामीणों से सीबीईओ ने वार्ता की।

बाप, (निसं)। धोलिया स्थित राजकीय माध्यमिक विद्यालय में रिक्त पद भरने की मांग को लेकर किया जा रहा तालाबंदी आंदोलन व धरना प्रदर्शन पांचवे दिन सोमवार सुबह समाप्त हो गया।

पांचवे दिन सोमवार को धरना स्थल पर पहुंचे सीबीईओ मनफुलसिंह ने लोगों को आश्वस्त किया तथा बताया कि विद्यालय मे चार शिक्षक लगा दिये है। इसके अलावा कनिष्ठ लिपिक की प्रतिनियुक्ति रद्द कर दी है। कंप्यूटर अनुदेशक भी इस सप्ताह यंहा कार्यभार संभाल लेगा। जिस पर ग्रामीणों ने विद्यालय का ताला खोल आंदोलन समाप्त करने की घोषण कर दी। उल्लेखनीय है कि धोलिया में गुरूवार को ग्रामीणों ने विद्यालय पर ताला जड़ धरना शुरू कर दिया था। विद्यालय में स्वकृत 15 पद में से 9 पद रिक्त पड़े थे। जिससे पढाई व्यवस्था प्रभावित हो रही थी। ग्रामीणों द्वारा बार बार मांग करने के बाद भी शिक्षकों के पद नहीं भरे जा रहे थे। इससे क्षुब्द ग्रामीणों ने तालाबंदी आंदोलन शुरू कर दिया था। पांचवे दिन सुबह सुबह ही सीबीइओ मनफुलसिंह वहां विद्यालय पहुंच गए।

सीबीईओ सिंह ने धरने में बैठे ग्रामीणों को बताया कि इस विद्यालय में कार्य व्यवस्थार्थ शिक्षक नरेंद्र सिंह, भवानी सिंह, गिरधारी राम को लगा दिया है। प्रतिनियुक्ति पर चल रहे कनिष्ठ सहायक हेमन्त ने भी सोमवार को कार्यभार ग्रहण कर लिया। उन्होने बताया कि कंप्यूटर अनुदेशक इसी हफ्ते राजकीय उच्च माध्यमिक धोलिया जॉइनिंग करेंगे। सीबीईओ ने ग्रामीणों को आश्वस्त किया कि एक अध्यापक और कार्य व्यवस्थार्थ लगाएंगे।

राशिफल मंगलवार 20 सितम्बर, 2022

पंडित अनिल शर्मा

आश्विनी मास, कृष्ण पक्ष, दशमी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2079, पुनर्वसु नक्षत्र रात्रि 9:07 तक, वारियान योग प्रातः 8:24 तक, वणिज करण प्रातः 8:14 तक, चन्द्रमा दिन 2:24 से कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-मिथुन, मंगल-वृष, बुध-कन्या, गुरू-मीन, शुक्र-सिंह, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज कुमार योग रात्रि 9:07 तक है। भद्रा प्रातः 8:14 से रात्रि 9:27 तक रहेगी। आज दशमी का श्राद्ध और गुरू नानक पूण्य दिवस (प्राचीन मत)।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:19 से 10:50 तक, लाभ-अमृत 10:50 से 1:51 तक, शुभ 3:22 से 4: 52 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 6:18, सूर्यास्त 6:23

मेष
अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। महत्वपूर्ण कार्यों से सफलता से मनोबल बढ़ेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। धन प्राप्त होगा।

वृष
धार्मिक-सामाजिक समारोह में भाग लेने का अवसर मिलेगा। शुभ कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

मिथुन
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। बनते कार्य बिगड़ने का भय बना रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

कर्क
परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

सिंह
स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

कन्या
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

तुला
घर-परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

वृश्चिक
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्यों में परिचितों से सहयोग मिलेगा। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

धनु
वाणी पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। शुभ कार्यों के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है।

मकर
अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार सम्पन्न होंगे।

कुंभ
अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। अनावश्यक धन खर्च होगा। मानसिक तनाव बना रहेगा। घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।

मीन
अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से आर्थिक लाभ हो सकता है। महत्वपूर्ण कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। धार्मिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा।